प्रेम-कहानी

विनोदशंकर व्यास

प्रेम-कहानी

विक्टर ह्यूगो

डोस्टावेस्की

विनोदशङ्कर व्यास

प्रकाशक
बल्देव-मित्रमंडल
राजादरवाजा
बनारस सिटी

प्रथम संस्करण
॥)

मुद्रक
विजयबहादुर सिंह बी० ए०
महाशक्ति प्रेस
बुलानाला, बनारस सिटी

प्रेम-कहानी

विक्टर ह्यूगो १८२९ ई०

विक्टर ह्यूगो १८५० ई०
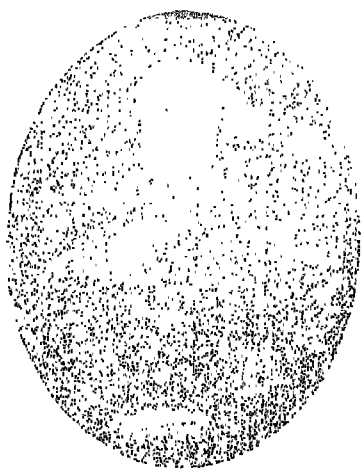
विक्टर ह्यूगो (वृद्धावस्था)

विक्टर ह्यूगो

किसी महान लेखक की रचना पढ़ने के बाद मैं कभी-कभी विचार करता हूँ कि उस लेखक के जीवन में कौन-सी ऐसी भीषण, विचित्र और अनोखी घटनाएँ उपस्थित हुईं, जिनका प्रभाव उसकी लेखनी पर पड़ा तथा जिनके कारण वह संसार के सम्मुख एक विशेष मानवी मनोवृत्ति के चित्रण में सफल हुआ।

यह मानी हुई बात है कि संसार के सभी लेखकों पर स्त्रियों की और पैसों के अभाव की गहरी छाप पड़ी है। मैं समझता हूँ, यही दो प्रधान शक्तियाँ उपन्यासों की जननी हैं!

फ्रेंच-साहित्य-महारथी विक्टर ह्यूगो की लेखनी पर 'एडिली' और 'जूलिएट' नाम की दो स्त्रियों का प्रभाव इतना अधिक पड़ा कि उसकी प्रतिभा का आलोक साहित्य-समुद्र में दीप-स्तम्भ (लाइट-हाउस) की भाँति दृष्टिगोचर हो रहा है और जो आज भी संसार के लेखकों के सामने पथप्रदर्शक बना हुआ है।

सन् १८२१ ई०—२० वर्ष की युवावस्था—में विक्टर ने अपनी प्रथम प्रेयसी 'एडिली' को एक प्रेम-पत्र लिखा, जिसका आशय यह था—"एडिली, तुम जानती हो कि मुझे सबसे बड़ी प्रसन्नता कब प्राप्त होगी? बस उसी दिन, जिस दिन हम दोनों का विवाह होगा—चाहे वह एक ही दिन के लिये क्यों न हो—बला से उसके दूसरे ही दिन मैं आत्महत्या कर डालूँ। उस प्रसन्नता का अनुभव मैं इस लिये करता हूँ कि तुम्हारे ऊपर मेरे सिवा किसी दूसरे का अधिकार नहीं है।"—इस पत्र के एक ही वर्ष बाद एडिली के साथ विक्टर का विवाह हुआ।

विक्टर के दो बड़े भाई और थे—एक चार वर्ष

बड़ा, दूसरा एक वर्ष। तीनों भाइयों की, बचपन से ही, साहित्य की ओर रुचि थी। तीनों ने एक साथ मिल कर एक पुस्तक लिखी थी। एक वर्ष बड़ा, दूसरा भाई, 'यूगेनी' भी एडिली को प्यार करता था! जिस दिन विक्टर का विवाह हुआ, उसी दिन से अभागे 'यूगेनी' का दिमाग खराब हो गया। छोटे भाई 'विक्टर' के साथ एडिली की शादी उसके लिये इतनी भयानक घटना हो गई कि वह पागल हो गया! रात में अपने कमरे के सभी सामान उसने तोड़ डाले—अनेक मोमबत्तियाँ जलाकर एक कोने में पड़ा-पड़ा देखता रहा! आखिर पागलपन यहाँ तक बढ़ा कि उसे पागलखाने में जाना पड़ा। वहाँ भी अवस्था न सुधरी। वह सदैव अपनी कल्पना में सुन्दरियों का नाच देखता रहा! बरसों बाद, सन् १८३७ ई० में, वहीं उसका देहान्त हुआ। उस समय तक विक्टर और एडिली का प्रेम मुरझाये हुए फूल के समान हो गया था!

❀ ❀ ❀ ❀

विवाह के पश्चात् दोनों—विक्टर और एडिली—का दाम्पत्य जीवन कुछ दिनों के लिये सुखी था। दस वर्षों के बीच में (१८२२ से १८३२ तक) एडिली के चार सन्तानें हुईं—दो लड़के और दो लड़कियाँ। इस समय तक विक्टर ह्यूगो विख्यात हो चुका था। उसकी कविताएँ, नाटक और उपन्यास, साहित्य में आदर की दृष्टि से देखे जाने लगे थे। इसी समय उसने अपना अमर उपन्यास 'नाट्रिडम-डि-पेरी' लिखा था। साहित्य में प्रभाव बढ़ने के कारण उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो गई। पुरुषों में उसके अनेक मित्र नहीं थे! इसका एक कारण था। लोगों की यह धारणा थी कि वह अभिमानी है, दम्भी है। किन्तु स्त्रियाँ उसकी ओर, उसके सुन्दर वेस्टकोट और रहन-सहन को देखकर, विशेष रूप से आकर्षित होती थीं। उसके पुरुष-मित्रों में 'सेंटी बुवी' नाम का एक सफल समालोचक था, जिसकी समालोचनाएँ फ्रेंच-साहित्य में आज भी बहुत महत्वपूर्ण समझी जाती हैं। इन दोनों की मित्रता का सूत्रपात,

विवाह के ५ वर्ष बाद, १८२७ में हुआ। 'सेंट ब्रुवी' उसके घर में उतना ही स्वतंत्र हो गया था, जितना स्वयं वह।

उन दिनों नाट्यशाला में 'बुवी' का उपस्थित रहना विक्टर के लिये अत्यन्त आवश्यक था, ताकि वह उसके नाटक की समालोचना भली भाँति कर सके। 'बुवी' की प्रबल लेखनी अपने मित्र विक्टर के लिये सदैव प्रस्तुत रहती थी। उसकी समालोचनाओं से जो कुछ लाभ होता था, उसे विक्टर भली भाँति जानता था। पेरिस के समाचारपत्रों पर 'बुवी' का गहरा प्रभाव था। तब भी कभी-कभी लोग उसके चरित्र की कड़ी आलोचना किया करते थे। उन दिनों पेरिस के जन-समुदाय का चरित्र भी भ्रष्ट ही हो रहा था, तो भी 'बुवी' के चरित्र पर टीका-टिप्पणी करने का एक विशेष कारण था। वह विक्टर की स्त्री का प्रेमी बन गया था! उसने अपना प्रेम विक्टर की पत्नी को पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया था; पति की ओर से पत्नी को विचलित करके उसने

अपने मित्र (विक्टर) की प्रसन्नता को नष्ट कर दिया था। अपनी पत्नी पर अपने मित्र की आसक्ति की बात विक्टर जानता था। सन् १८३० में 'बुवी' को पत्र लिखते समय विक्टर ने लिखा था—"तुम प्रायः मुझसे मिलने आओगे और तुम्हें यह न प्रतीत होगा कि मुझसे अच्छा तुम्हारा कोई और भी मित्र हो सकता है।"

जुलाई सन् १८३१ में उसने लिखा—"मेरा समस्त सुख नष्ट हो गया; क्योंकि एडिली ने ही इस प्रेम का आरम्भ किया है, जिसे मैं अपनी काव्यमयी आत्मा के हर-एक रेशे से प्यार करता था और जिसके विषय में कभी मैं कल्पना भी नहीं करता था कि यह ऐसी बेवफ़ा साबित होगी।"

अन्त में दोनों की मित्रता समाप्त हो गई। विक्टर को फिर इतनी भी चिन्ता न रह गई कि उसकी पत्नी अपनी प्रसन्नता के लिये किससे, कहाँ, कैसे और कब मिलती है!

❀ ❀ ❀ ❀

एडिली के विश्वासघात ने विक्टर ह्यूगो को विरक्त कर दिया। स्त्रियों पर से उसका विश्वास उठ गया! उस समय तक उसके कई नाटक खेले जा चुके थे। जनता ने उनका खूब स्वागत किया था। १८३३ में उसका एक नवीन नाटक खेला जानेवाला था। उन दिनों एक नाट्यशाला में उसकी दृष्टि 'जूलिएट' नाम की एक अत्यन्त सुन्दरी ऐक्ट्रेस पर पड़ी। वह जवानी के पूर्ण आवेग में थी। उसकी आकृति बड़ी पवित्र और गंभीर थी। उसकी आँखें शान्त और मनमोहक थीं। रिहर्सल के समय विक्टर ने अनेक बार उसे देखा था। उसके सौन्दर्य ने विक्टर को अपनी ओर आकर्षित किया। किन्तु उसे उसपर भी विश्वास करने का साहस न हुआ!

जूलिएट के प्रति विक्टर की गुप्त सहानुभूति होने के कारण ही, विक्टर के एक नये नाटक में, उसे एक रानी का पार्ट दिया गया। जूलिएट को यह भली भाँति मालूम था कि विक्टर ऐक्ट्रेसों (अभिनेत्रियों) को घृणा की दृष्टि से देखता है! सम्भवतः

यही कारण है कि जूलिएट अपनी सम्पूर्ण स्त्री-शक्ति से उसके प्रेम पर विजय प्राप्त करना चाहती थी। वह पूर्ण रूप से उसपर आसक्त हो गई। उसकी हार्दिक कामना यही थी कि विक्टर भी उसे प्यार करे। किन्तु नेपथ्य (ग्रीन रूम) में वह विक्टर के प्रति अरुचि और अवहेलना प्रकट करती थी। फिर भी विक्टर के इस नवीन नाटक में जूलिएट को अपने पार्ट में बहुत अधिक सफलता प्राप्त हुई। जनता उसके कौशल पर मुग्ध हो गई। विक्टर को भी पता चल गया कि संसार में एक ऐसी भी स्त्री है, जिससे उसे सुख और शान्ति मिल सकती है—उसके हृदय के लिये वह सब-कुछ मिल सकता है, जिसे उसने कृतघ्न एडिली के साथ खो दिया था। जूलिएट ने भी समझ लिया कि उसने अपने अभिलषित पुरुष को पा लिया, जिसके लिये वह सर्वस्व देने को प्रस्तुत थी।

फरवरी १८३३ के अन्त में, एक-दूसरे के हृदय को जान कर, दोनों एक हो गये। यह केवल क्षणिक आवेग से उत्पन्न प्रेम न था, बल्कि संसार में दो

आत्माओं का पारस्परिक प्रगाढ़ मिलन था। जीवन-पर्यन्त दोनों एक होकर रहे। यह घनिष्ठ सम्बन्ध ५० वर्ष से कम नहीं रहा।

जूलिएट ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति विक्टर की प्रसन्नता के लिये लगा दी। वह उसके लिये कठिन-से-कठिन परिश्रम करने में भी न हिचकती थी। दिन-भर उसकी कविताओं, नाटकों और उपन्यासों की नकल करती रहती थी। उसने अपनी विशेषताओं के कारण विक्टर पर इतना प्रभाव डाला कि वह सब-कुछ भूल गया। वह अपने इष्ट-मित्रों और सम्बन्धियों से भी मिलना छोड़ बैठा था! कभी-कभी कमरे में बैठे हुए लोगों के मध्य में वह अपनी कविताओं को गुनगुनाता था। उस समय एक कोने में बैठी जूलिएट चुपचाप अपने हृदय की उन्मत्त प्रसन्नता में अनुभव करती थी कि कवि के पवित्र भाव उसके प्रेम को लेकर ही अंकित किये गये हैं।

इन दोनों के जीवन में अगणित प्रेम-पत्रों का निर्माण हुआ। जूलिएट के साधारण शब्दों में लिखे

हुए प्रेम-पत्र, विक्टर ह्यूगो-जैसे महान कलाकार के सम्मुख, साहित्यिक भाषा में न होने पर भी, विशेष महत्व रखते थे। जूलिएट के भाव और भाषा की सादगी इस पत्र से मालूम पड़ती है—"उस क्षण से, जब मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, यह मेरा शरीर, मेरी आत्मा और मेरा सम्पूर्ण जीवन एकमात्र तुम्हारे लिये है। मैं अपनी सम्पूर्ण शक्तियों से तुम्हें प्रसन्न करने में कभी विचलित न होऊँगी। जब मैं अपना सब कुछ तुम्हारी प्रसन्नता के ऊपर निछावर कर चुकी हूँ, तब फिर मेरे पास बच ही क्या गया है। कल्पना करो, खोजो, देखो कि मैं तुम्हारे लिये क्या नहीं कर सकती।"

❀ ❀ ❀

१८३३ ई० में, एक दिन, विक्टर ह्यूगो का एक नाटक खेला जा रहा था। उस दिन एक ऐसी विचित्र घटना हो गई, जिससे जूलिएट के नाटकीय जीवन पर बड़ा भारी आघात पहुँचा। बात यह हुई कि विक्टर के एक मित्र (?) ने 'अलेकजेंडर डूमस'

और विक्टर में झगड़ा लगा दिया। झगड़े का मुख्य कारण डूमस के ऊपर समाचार-पत्रों द्वारा आक्षेप था। परिणाम यह हुआ कि विक्टर ह्यूगो के नाटक के प्रथम अभिनय के समय, डूमस के समर्थकों का एक दल, अभिनय को विशृंखल कर देने के लिये, आ पहुँचा। इस दल के लोगों ने अभिनय आरम्भ होते ही कोलाहल मचाया। उसी समय जूलिएट अपना पार्ट कर रही थी। विरोधी-दल ने, विक्टर ह्यूगो की प्रेमिका होने के कारण, उसपर भीषण आक्रमण किया, जिसके कारण जूलिएट सदैव के लिये रङ्गमञ्च से उदासीन हो गई। दो वर्ष तक वह बिल्कुल बेकार बैठी रही। फलतः ऋण के पंजे में जकड़ गई। लहनदारों ने शीघ्र ही सब रुपये चुकाने को बाध्य किया। उसका खर्च भी बहुत अधिक था। वह एक अत्यन्त सुन्दर गृह में निवास करती थी। पहले थियेटर से उसकी इतनी अधिक आय थी कि खर्च में कमी करने के प्रश्न पर कभी उसने विचार ही नहीं किया था। यकायक वह खुले हाथ को रोक

न सकी। उसके लिये यह बड़े अभिमान की बात थी कि वह अपने प्रेमी का एक सुसज्जित और सुन्दर भवन में स्वागत करे। अन्त में उसकी स्थिति ऐसी जटिल हो गई कि महाजन लोग उसका सामान तक उठा ले गये। सचमुच उसकी अवस्था बड़ी दय नीय हो गई। इसका एक कारण यह भी था कि वह अपनी इस विपत्ति को विक्टर ह्यूगो के सामने प्रकट नहीं करना चाहती थी। उसने अपना खर्च बहुत-कुछ घटा दिया था।

कुछ लोगों ने जूलिएट की इस अवस्था का समाचार विक्टर ह्यूगो से कहा। उन लोगों का उद्देश था कि इन दोनों में अनबन हो जाय। परिणाम यह हुआ कि दोनों में झगड़ा होने लगा। एक दिन अत्यंत दुखी होकर जूलिएट ने विक्टर से कहा—"मैं आत्म-हत्या कर डालूँगी, नहीं तो मुझे अपने मार्ग पर चलने दो।"

विक्टर भी जूलिएट पर अविश्वास करने लगा था। इन दिनों विक्टर का व्यवहार उसके साथ

अच्छा न था। वह न तो उसे छोड़ना ही चाहता था और न किसी भाँति उसकी सहायता करने के लिये ही प्रस्तुत होता था। ता० ३ अगस्त (१८३४ ई०) को जूलिएट पेरिस छोड़कर 'ब्रेस्ट' में अपनी एक बहिन के पास चली गई। किन्तु विक्टर ह्यूगो का उसके बिना रहना असंभव था। उसने उसे एक पत्र में लिखा कि मैं तुम्हारा आवश्यक ऋण चुका दूँगा। बस एक सप्ताह के भीतर ही वह जूलिएट को वापस लौटा लाया। यद्यपि उसने कुछ आवश्यक ऋण दे दिया था, तथापि अभी बहुत कुछ देना बाकी था।

जूलिएट बड़ी सादगी से एक साधारण-सा कमरा लेकर रहने लगी। यहाँ तक कि वह जाड़े के दिनों में देर में सो कर उठती, जिससे आग का खर्च बच जाय! उसने विक्टर ह्यूगो के पास इस आशय का एक पत्र भेजा—"मेरी दरिद्रता, मेरे मैले परदे, मेरे लोहे के चम्मच आदि प्रति क्षण इसकी गवाही दे रहे हैं कि मैं तुम्हें सब प्रकार से प्यार करती हूँ।"

विक्टर ह्यूगो की हस्तलिपि पढ़ने योग्य न होती

थी। अतएव जूलिएट दिन-भर बैठी उसकी साफ़ नक़ल किया करती थी। दुर्भाग्य से जूलिएट का सब सामान लहनदारों ने नीलाम करा लिया। अपनी घोर दुर्दशा देखते हुए भी जूलिएट का एकमात्र उद्देश था विक्टर ह्यूगो को प्रसन्न रखना। किन्तु खेद के साथ यह कहना पड़ेगा कि समय के फेर से विक्टर ह्यूगो अन्य स्त्रियों पर आसक्त होकर जूलिएट के प्रति हृदय-हीनता का व्यवहार प्रदर्शित करने लगा! बेचारी जूलिएट अब इस योग्य न थी कि किसी भाँति अपने प्रेमी के इस अपराध के लिये उसे किसी प्रकार का कष्ट दे। केवल कभी-कभी व्यंगों द्वारा ही अपनी अन्तरात्मा के व्यथित भावों को, उसके सम्मुख हँस-कर या रोकर, प्रकट कर देती थी।

❀ ❀ ❀

विक्टर ह्यूगो की दिनचर्य्या में जूलिएट का सह-योग अत्यन्त आवश्यक हो गया था। विक्टर के प्रेम के बन्धन ने उसकी सारी स्वतंत्रता छीन ली। जूलि-एट बचपन से ही अनाथ थी। अतएव स्वतंत्रता के

जूलिगुट १८३२ ई०

पृडिलौ
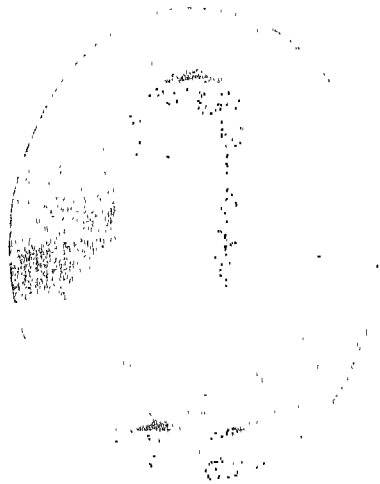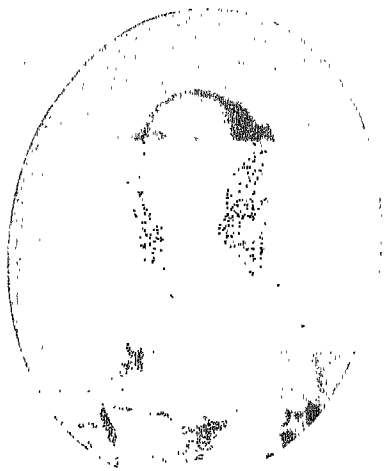
वायुमंडल में विचरना उसके लिये स्वाभाविक था। किन्तु अब रहन-सहन में भी परिवर्त्तन हुआ। विक्टर उसे घर से अकेली बाहर निकलने देने में भी सहमत नहीं था।

एडिली ने विक्टर के हृदय से विश्वास का भाव नष्ट कर दिया था। यही कारण था कि जिस जूलिएट ने उसकी प्रसन्नता के लिये अपना सर्वस्व-अर्पण कर दिया, उसके प्रति विश्वास करने में भी उसे संदेह होता था।

जूलिएट अपने खर्च का भार विक्टर के ऊपर नहीं डालना चाहती थी। उसके मन में प्रवृत्ति हुई कि फिर से रंग-मंच पर उतर कर अपना भाग्य आजमाना चाहिये। अतएव विक्टर ह्यूगो के एक नवीन नाटक की प्रतिलिपि करते समय उस नाटक की एक पात्री के पार्ट का बड़े ध्यान से अध्ययन करती रही। नाटक पूर्ण हो जाने पर उसके खेले जाने का अवसर आया। विक्टर की इच्छा के अनुसार नाट्यशाला के संचालक से निश्चय हो चुका था कि जूलि-

एट उसमें रानी का पार्ट करेगी; किन्तु विक्टर ह्यूगो की प्रथम पत्नी 'एडिली' इस बार बाधक हुई। जूलिएट के प्रति उसका द्वेष इतना बढ़ गया था कि नाट्य-मन्दिर के संचालक से स्वयं जाकर उसने जूलिएट का—उस अभिनय में पार्ट करने का—विरोध किया। आखिर जूलिएट के नाटकीय जीवन का इस बार अन्त ही हो गया।

विक्टर ह्यगो भी मन में यह नहीं चाहता था कि उसकी प्रेयसी जनता के सम्मुख रंग-मंच पर आये। अब जूलिएट के लिये कोई साधन न रहा। वह दिन-रात अपने घर में बैठी-बैठी ऊब गई थी। वह सैकड़ों बार विचार करती, इस तरह कारावास में रहकर गुलामी के दिन काटने से तो कहीं अच्छा है कि पेरिस छोड़कर दूसरे नगर में भाग जाऊँ। लेकिन जब प्रसन्नमुख विक्टर उसके सामने आकर प्यार-भरे शब्दों में बातें करता, तब वह सब कुछ भूल जाती !

दिन बीतने लगे !

विक्टर ह्यूगो की रचनाओं को पढ़कर जूलिएट को विश्वास हो गया था कि वह एक बहुत बड़ा कलाकार है। उसका सारा समय अपने प्रेमी की रचनाओं के पढ़ने और उनकी नकल करने तथा उन्हें लोगों को सुना कर उनकी प्रशंसात्मक सम्मति के सुनने में ही व्यतीत होता था। वह विक्टर के मकान से दूर, एक साधारण कमरे में, रहती थी। कभी-कभी वह विक्टर के कमरे में आकर देखती कि कमरा गन्दा पड़ा हुआ है, लम्प में प्रकाश ठीक नहीं है, दावात की स्याही सूख गई है और बिस्तर मैला पड़ा हुआ है। ऐसी अव्यवस्था देखकर वह मन में सोचती, बेचारा लेखक किस तरह लिखता है! फिर वह सब चीजों का क्रम ठीक करती। इसी में वह अपनी प्रसन्नता का अनुभव करती।

❀ ❀ ❀

यकायक विक्टर ह्यूगो के व्यवहार में अन्तर देखकर जूलिएट ने एक दिन उससे कहा—"तुम्हें अभी प्रेम के साहित्य में बहुत कुछ सीखना बाकी है। भविष्य

में 'सन्देह' की जगह 'प्रेम', 'क्रोध' के स्थान पर 'प्रेम', 'शिकायत' की जगह 'प्रेम' और 'ईर्षा' शब्द के लिये भी 'प्रेम' पढ़ना सीखो।

अब, जूलिएट के जवानी के दिन ढल रहे थे। उसके भूरे बाल कहीं-कहीं सफ़ेद हो रहे थे। उसने उन्हीं दिनों विक्टर को एक पत्र में लिखा था—"तुम अब तक उन्हीं दिनों की तरह सुन्दर बने हुए हो, जब तुम अकेले थियेटर जाया करते थे। फ्रान्स के साहित्यिकों में 'फैशन' के प्रति सबसे अधिक तुम्हारी सुरुचि है। किन्तु केवल यही कारण नहीं है कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। पता नहीं, क्यों भगवान ने तुम्हें फ्रान्स का धुरन्धर साहित्यकार बनाया है और मुझे तुम्हें प्यार करनेवाली! तुम्हारा यौवन अब तक सुरक्षित है, लेकिन मेरे केशों में चाँदी के डोरे इधर-उधर झलकते हैं!"

इन्हीं दिनों एक विचित्र घटना हुई। विक्टर ह्यूगो एक यहूदी अभिनेत्री की ओर आकर्षित हुआ। घनिष्ठता बढ़ने लगी। यह समाचार जूलिएट को भी

मिला। उसका हृदय विदीर्ण हो उठा। उसने विक्टर से महा दुःखित होकर कहा—"एक दिन कभी ऐसा आवेगा, जब तुम मेरे इस प्रेम के मूल्य को समझोगे।" वास्तव में विक्टर ह्यूगो का भाव जूलिएट के प्रति कुछ उदासीन-सा हो रहा था। उसकी प्रेयसी यहूदी अभिनेत्री का पति 'पेंटर' (चित्रकार) था, उसका नाम था 'बियर्ड।' बियर्ड को भी इस गुप्त प्रेम का हाल मिल गया था। एक दिन विक्टर उस यहूदी नटी के साथ होटल में बैठा हुआ था। इतने में पुलिस-कमिश्नर को साथ लिये हुए बियर्ड आ पहुँचा! उन दिनों फ्रान्स में इस तरह के अपराधी के लिये बड़ा कठोर दंड नियत था, विक्टर ह्यूगो और यहूदी नटी—दोनों ही—जेलखाने की हवा खाते; लेकिन विक्टर स्वयं 'हाउस अफ पियर्स' का मेम्बर था; इसलिये कुछ न हो सका! कुछ लोगों का तो यह भी कहना है कि स्वयं बादशाह 'लुई-फिलिप' ने इस मामले को शान्त किया—उसने बियर्ड को बुलाकर कई चित्र बनाने की आज्ञा दी और पचास हजार

फ्रांक पुरस्कार में दिये। लेकिन आखिर विक्टर की यह कहानी समाचारपत्रों में फैल गई। सब जगह इसकी चर्चा होने लगी। निस्संदेह इस घटना से उसका बड़ा अपमान हुआ। किन्तु बेचारी जूलिएट को इन सब बातों का कुछ भी पता न था। उसे तो तब मालूम हुआ, जब एक दिन उसे डाक से एक पैकेट मिला। उसने आश्चर्य से उसे खोला। उसमें विक्टर ह्यूगो के लिखे हुए अनेक प्रेम-पत्र थे। और, ये वही पत्र थे, जो उस पचीस वर्ष की यहूदी ऐक्ट्रेस के पास विक्टर द्वारा भेजे गये थे! पत्रों की भाषा, भाव और शैली से उसको विश्वास हो गया कि विक्टर के ही लिखे ये पत्र हैं। कहने की जरूरत नहीं कि इन पत्रों को जूलिएट के पास भेजनेवाले का एकमात्र उद्देश यही था कि विक्टर और जूलिएट में गहरी लड़ाई हो। अतएव यह लिखना कठिन है कि इन पत्रों के कारण जूलिएट के हृदय पर कितना भीषण आघात पहुँचा। अन्त में जूलिएट ने स्पष्ट शब्दों में विक्टर से कहा—"तुम निर्णय कर लो कि

दोनों में से किसे चाहते हो—यहूदी नटी को या मुझे ?"

जूलिएट ने तीन महीने का समय, विक्टर ह्यूगो को इसपर विचार करने के लिये, दिया। फिर भी वह निश्चय न कर सका कि दो में से किस एक को वह छोड़ेगा! आखिर जूलिएट के कहने पर, एक दिन न जाने क्या उसके मन में आ गया, कि उस यहूदी ऐक्ट्रेस के यहाँ जाकर कह आया—"भविष्य में मेरा और तेरा केवल साधारण मित्रता से अधिक सम्बन्ध न रहेगा।" इसपर जूलिएट ने अपने प्रेमी को हृदय से क्षमा कर दिया। उसका अटल प्रेम सदैव विक्टर ह्यूगो के साथ छाया की भाँति बना रहा।

विक्टर ह्यूगो राजनीतिक क्षेत्र में भाग लेने लगा। उस समय फ्रांस में विद्रोह की अग्नि धधक रही थी। एक राजा के बाद दूसरा, और फिर तीसरा—इसी तरह, रक्तपात और अशान्ति के कारण देश की स्थिति बड़ी भयावह हो गई थी। विक्टर भी इन्हीं विद्रोही-दलों में से एक का प्रधान था! अपने को भी गोली से

मारे जाने की प्रतिध्वनि उसे सुनाई पड़ी। अन्त में फ्रांस छोड़कर वह 'ब्रूसेल्स' भाग गया। 'ब्रूसेल्स (बेलजियम) में, राज्यक्रांति के कारण, फ्रांस के अधिकांश भागे हुए लोग अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

विक्टर एक मकान लेकर अपनी पत्नी 'एडिली' के साथ रहने लगा। पाठकों को यह स्मरण रखना चाहिये कि 'एडिली' ने कभी विक्टर का साथ नहीं छोड़ा। दोनों के हृदय में चाहे जो कुछ रहा हो; लेकिन 'एडिली' ने विक्टर से अलग होकर जीवन व्यतीत करना कभी भी उचित नहीं समझा था।

ब्रूसेल्स में जूलिएट भी विक्टर के साथ ही रहती थी। 'एडिली' तो विक्टर के साथ ही रहती थी। इस समय तक जूलिएट, विक्टर और एडिली, तीनों की उम्र ढल चुकी थी। जूलिएट कभी विक्टर के घर पर न जाती—सिर्फ एडिली के कारण। इसलिये विक्टर ही प्रति दिन जूलिएट के कमरे में अपना अधिकांश समय व्यतीत करता। किन्तु जूलिएट, एडिली से, किसी प्रकार का ईर्षा-द्वेष नहीं रखती थी।

वह उसके लड़कों को बहुत प्यार करती थी। विक्टर को अपने परिवार के साथ सुखी देखकर उसे हार्दिक प्रसन्नता होती थी। एडिली के लड़के, अपनी माता से, जूलिएट की बड़ी प्रशंसा करते थे। यही कारण था कि एडिली, जूलिएट से मित्रता करके, उससे सद्भाव रखना चाहती थी। अन्त में एडिली ने अपने पति से जूलिएट को अपने घर में आमंत्रित करने का विचार प्रकट किया। उसने इस आशय का एक पत्र भी जूलिएट के पास भेजा—"तुम सब बातों को भूल जाओ, एक दिन हमारे घर पर आओ और हम लोगों के साथ बैठकर भोजन करो।"

१८६७ ई० की २२ वीं जनवरी को जूलिएट ने एडिली का निमंत्रण स्वीकार किया, उसके यहाँ गई। दोनों को एक दूसरे से अत्यन्त स्नेह हो गया! इसके बाद जूलिएट उन लोगों के साथ ही रहने लगी। विक्टर इन दोनों स्त्रियों के साथ समान व्यवहार रखते हुए बड़ी प्रसन्नता से अपने वृद्धावस्था के दिन व्यतीत करने लगा।

डेढ़ वर्ष बाद, एडिली की मृत्यु १८६८ ई० की अगस्त को, ब्रूसेल्स में ही २७ वीं हुई।

फ्रांस के शासन में भी परिवर्त्तन हुआ। प्रजा-तंत्र-राज्य की घोषणा हुई। १९ वर्ष देश-निकाला भोगने के बाद विक्टर, ५ सितम्बर १८७० ई० को, ब्रूसेल्स से पेरिस जाने के लिये रवाना हुआ।

❀ ❀ ❀

'विक्टर ह्यूगो' योरप के सभी देशों में प्रचंड शक्तिशाली साहित्यकार और अमर कलाकार माना जाने लगा। उसने कविता, नाटक, उपन्यास, समा-लोचना और इतिहास, सब कुछ फ्रेंच-साहित्य के भंडार में भरा था। यह कहना पड़ेगा कि उस युग के सभी लेखकों पर विक्टर ह्यूगो की छाप पड़ी थी। कुछ अँगरेज़ समालोचकों का कहना है कि विक्टर ह्यूगो के समान लेखक किसी भाषा और किसी युग में नहीं हुआ!

१८७३ तक विक्टर ह्यूगो के दोनों लड़कों का देहान्त हो चुका था। उसकी एक छोटी लड़की, बिना

अपने पिता को सूचना दिये ही, एक जहाज के कप्तान के साथ, भाग गई। उस कप्तान ने उसे भारतवर्ष में लाकर छोड़ दिया। यहाँ पर आकर वह दु:खों के कारण पागल हो गई थी! इस तरह, अपनी वृद्धावस्था में, अपने परिवार का विध्वंस, उस महान लेखक ने अपनी ही आँखों से देखा था!

विक्टर ह्यूगो के प्रति जूलिएट के प्रेम में कभी अंतर नहीं पड़ा। वह अपनी सम्पूर्ण शक्तियों से उसे वृद्धावस्था में भी उसी तरह प्यार करती रही। विक्टर ह्यूगो अपने उपन्यासों में स्त्री-मनोवृत्तियों के भिन्न-भिन्न चित्र अंकित करने में जो पूर्ण रूप से सफल हुआ, उसका प्रधान कारण जूलिएट का सहवास ही कहना पड़ेगा। दोनों ने एक-दूसरे का खूब अध्ययन किया था। जूलिएट ने सन् १८८३ ई० की पहली जनवरी को यह अंतिम पत्र विक्टर ह्यूगो के पास लिखा था—"मैं इस समय भी केवल एक वाक्य में यह लिखते हुए अत्यंत प्रसन्न हूँ कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।"

११ मई सन् १८८३ ई० को विक्टर ह्यूगो की वह जीवनी-शक्ति—जूलिएट—सदैव के लिये इस संसार में उसे अकेला छोड़कर चली गई। उसकी मृत्यु के दो वर्ष बाद विक्टर ह्यूगो भी, २२ मई १८८५ ई० को, संसार में अपना अमर नाम छोड़कर चला गया। उसकी अंत्येष्टि क्रिया के समय, फ्रान्स की जनता ने, लाखों की संख्या में सम्मिलित होकर, अपना सम्मान प्रकट किया था।
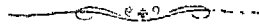
डोस्टावेस्की

रूसी कथा-साहित्य में 'फेडर डोस्टावेस्की' एक बहुत बड़ा सिद्धहस्त लेखक हुआ है। उसके उपन्यास संसार की अनेक भाषाओं में अनूदित हो चुके हैं। साधारण जन-समुदाय की मनोवृत्तियों के चित्रण में वह खूब सफल हुआ है। उसके समय में समस्त योरप के उपन्यास-साहित्य का क्रम ही कुछ दूसरा था।

विक्टर ह्यूगो की छाप १९ वीं शताब्दी के मध्य में योरप के सभी उपन्यास-लेखकों पर पड़ी थी। 'ला-मिज़रेब्ल' के 'जीन वेल्जिन' ने सभी प्रमुख लेखकों को अपनी ओर आकर्षित किया। वही युग

था, जब योरप के कथा-साहित्य में उपन्यास-लेखकों की प्रवृत्ति, चोर-डाकू और दरिद्र तथा निम्न श्रेणी के लोगों के चरित्र-चित्रण में, हुई। डोस्टावेस्की ऐसे ही लोगों की जीवन-कहानी लिखने का विशेषज्ञ माना जाता है।

मैं यहाँ पर केवल उसकी निजी प्रेम-कहानी ही लिखूँगा।

डोस्टावेस्की के एक मित्र ने लिखा है—"२० वर्ष की अवस्था तक नवयुवक बहुधा सुन्दरी युवतियों की कल्पना में भटका करते हैं और अपना सर्वस्व लुटा देने को प्रस्तुत रहते हैं। किन्तु, इस तरह की कोई बात डोस्टावेस्की के सम्बन्ध में मैंने नहीं देखी। स्त्रियों के प्रति वह अन्यमनस्क था।"

युवावस्था में, रूस के बादशाह 'ज़ार' के शासन का विध्वंस करने के प्रयत्न में, डोस्टावेस्की को मृत्यु-दंड मिला। किन्तु गोली से मारे जाने के समय से ठीक दो मिनट पहले बादशाह का हुक्मनामा लेकर एक सैनिक आया, जिसमें लिखा था कि 'मृत्यु-दंड

से छुटकारा देकर उसे आजन्म कारावास दिया जाय।'

उस समय आजन्म कारावास के क़ैदी 'साइबेरिया' भेज दिये जाते थे। रूस के लिये 'साइबेरिया' वैसा ही था, जैसा भारत के लिये 'एंडमन'। 'डोस्टावेस्की' साइबेरिया भेज दिया गया।

डोस्टावेस्की के कारावास की कहानी इतनी भयानक है कि पढ़कर हृदय विदीर्ण हो जाता है। वहाँ का दूषित वायुमंडल किसी तरह उसके उपयुक्त न था। उसके दिन पहाड़ हो गये थे। किन्तु ऐसे समय में ही उसकी प्रेम-कहानी आरम्भ होती है!

उन दिनों सेना का एक कप्तान डोस्टावेस्की को बहुधा अपने यहाँ आमन्त्रित किया करता था। कप्तान की पत्नी 'मेरिया डोमेट्रियान' डोस्टावेस्की के प्रति विशेष आदर और प्रेम का भाव प्रकट करने लगी। उसका विश्वास था कि सदैव रुग्णावस्था में रहने के कारण शीघ्र ही उसके पति की मृत्यु हो जायगी! और तब वह डोस्टावेस्की को अपने दूसरे पति

के रूप में ग्रहण करेगी। उसे सात वर्ष का एक बालक भी था।

डोस्टावेस्की, ३३ वर्ष की अवस्था में, अपने जीवन में पहली बार, उस स्त्री को प्यार करने लगा; किन्तु इसी समय उस कप्तान की बदली साइबेरिया के एक दूसरे नगर में हो गई। वह अपनी स्त्री और बच्चे को लेकर वहाँ चला गया। दैव-योग से, कुछ दिनों के बाद, वहीं पर उसकी मृत्यु हो गई। उसकी पत्नी ने एक पत्र में अपने पति (कप्तान) की मृत्यु का समाचार डोस्टावेस्की को लिखा। डोस्टावेस्की उसपर प्रेम से अधिक दया करता था। वह उसकी आर्थिक सहायता भी करने लगा। वह अपने सम्बन्धियों द्वारा प्राप्त हुए धन को अपने लिये न खर्च करके अपनी प्रेमिका के पास भेज दिया करता था।

'मेरिया' का एक दूसरा पत्र आया। उसमें लिखा था—"मैंने एक नया प्रेमी खोज लिया है! मैं शीघ्र ही उससे विवाह करूँगी।"

डोमब्रावेस्की

एना प्रोथेना
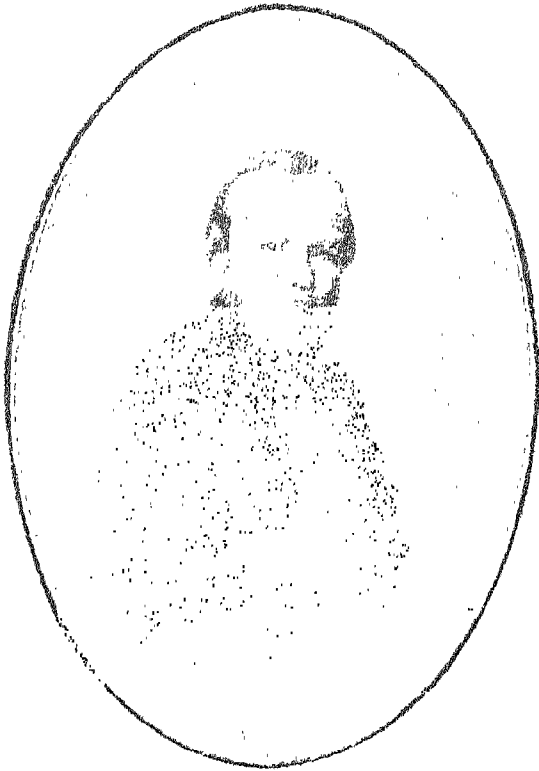
इस सूचना से भी डोस्टावेस्की को प्रसन्नता ही हुई। वह सदैव अस्वस्थ ही रहता था, अतएव 'मेरिया' से विवाह करने के लिये अपने को उपयुक्त नहीं समझता था।

'मेरिया' अपने उस प्रेमी से झगड़ा करके फिर डोस्टावेस्की के पास लौट आई! वह धीरे-धीरे डोस्टावेस्की के ऊपर अपने प्रेम का प्रभाव डालने लगी। वह कभी-कभी बड़े दर्द-भरे शब्दों में कहती—मैं आत्म-हत्या कर डालूँगी।

उसके दुर्भाग्य और उसकी दयनीय अवस्था ने डोस्टावेस्की को उससे विवाह करने को वाध्य कर दिया। एक दिन उन दोनों का विवाह भी हो गया! किन्तु बड़े आश्चर्य्य की बात है कि विवाह से एक रात्रि पूर्व 'मेरिया' अपने एक दूसरे नवयुवक प्रेमी के साथ रह चुकी थी। किन्तु इस रहस्य को उसने डोस्टावेस्की से छिपा रक्खा था! वह अपने को सदैव एक आदर्श पत्नी के रूप में ही डोस्टावेस्की के सामने प्रदर्शित किया करती थी!

विवाह के पश्चात् भी वह बराबर अपने उस नये प्रेमी से मिलती-जुलती रही। उसके स्वभाव में यह एक विशेषता थी कि वह सदैव संसार को, और साथ-ही साथ कल्पना-लोक में भ्रमण करनेवाले अपने निरीह पति को भी, धोके में रखती थी। किन्तु डोस्टावेस्की अपनी इस नवीन पत्नी पर विश्वास ही करता रहा; क्योंकि जेल की यातनाओं के बाद का यह दाम्पत्य जीवन उसे स्वर्ग के समान दिखाई पड़ता था।

उन दिनों रूस में नवीन शासन-सुधार की योजनाएँ उपस्थित की गई थीं। डोस्टावेस्की ने बादशाह के पास एक पत्र लिखा, जिसमें उसने अपने कष्टों का वर्णन करते हुए अपने निर्वासन से मुक्ति पाने की प्रार्थना की थी। और हुआ भी ऐसा ही। बादशाह ने प्रसन्न होकर उसे मुक्त कर दिया!

इतने दिनों के बाद 'पिटर्सबर्ग' जाकर, अपने इष्ट-मित्रों और सगे-सम्बंधियों के साथ वह अपने जीवन को अधिक सुखी बना सकेगा—ऐसी उसे

आशा थी। साथ-ही-साथ 'मेरिया' अपने दूसरे नवयुवक प्रेमी को अपने प्रेम के जाल में फँसा कर अपने साथ ही 'पिटर्सबर्ग' तक ले गई थी ! डोस्टा-वेस्की को इसका कुछ भी पता न था; क्योंकि वह युवक प्रेमी एक स्टेशन पीछे रह कर साथ ही पहुँचा था !

डोस्टावेस्की को अपनी पत्नी पर विश्वास था। वह इस समय तक स्त्रियों की मनोवृत्ति का पारखी न हो पाया था।

किन्तु भाग्य ने अपने खजाने में से विष का एक टुकड़ा निकाल कर डोस्टावेस्की के सामने फेंका। उसकी पत्नी के लिये वहाँ की जलवायु अनुकूल न थी। कुछ ही दिनों के बाद वह ऐसे भयानक रोगों के पंजे में फँस गई कि फिर वह अपने को सम्हाल न सकी। दो महीनों के अन्दर ही उसकी मुखाकृति में बहुत बड़ा परिवर्त्तन हो गया। अभागी खाँसते-खाँसते मुँह से खून उगलने लगी। इस भयानक दशा को देखकर उसका वह नवयुवक प्रेमी, बिना किसी

प्रकार की सूचना दिये ही, भाग गया ! इस घटना से 'मेरिया' के दिल पर गहरी चोट लगी ।

एक दिन 'मेरिया' ने अपने पति से अपने हृदय की बातें प्रकट कीं । उसने बड़े कारुणिक ढंग से अपने उस निष्ठुर प्रेमी की कामुकता का वर्णन किया, जिसका प्रेम गुप्त रूप से चल रहा था और जो अन्त में बड़ी निर्दयता के साथ उसे छोड़कर भाग गया था । उसने यह भी कह दिया कि उस नवयुवक प्रेमी के साथ बैठकर कभी-कभी वह अपने पति (डोस्टावेस्की) के प्रति किस तरह विश्वासघात की हँसी हँसा करती थी !

डोस्टावेस्की सुनकर चौंक उठा । वह बड़े आश्चर्य से 'मेरिया' की ओर देखने लगा । 'मेरिया' ने स्पष्ट शब्दों में कहा—मैंने कभी तुम्हें हृदय से प्यार नहीं किया; केवल तुम्हारी दयालुता के कारण ही तुम्हारे साथ मेरा सम्बंध रहा ।

उन दिनों 'डोस्टावेस्की' पिटर्सबर्ग में रहता था । उसकी पत्नी उससे अलग होकर 'टवेर' में रहती थी । लेकिन ऐसी स्थिति में भी डोस्टावेस्की उसका

सारा खर्च देता था ! कभी-कभी वहाँ स्वयं जाकर उसकी खोज-खबर भी लेता था ! हो सकता है कि अपने विख्यात नाम और यश पर धब्बा न लगने देने के लिये ही वह अपनी इस कपटी स्त्री के प्रति सहानुभूति रखता था ।

'मेरिया' का स्वभाव भी विचित्र ही था । वह अपने प्रथम स्वर्गीय पति के प्रति भी सदैव घृणा के भाव ही प्रकट करती रहती थी । डोस्टावेस्की के सम्बन्ध में भी उसके ऐसे ही मनोभाव थे । बहुधा वह अपने कमरे में टँगे हुए डोस्टावेस्की के फोटो के सामने खड़ी होकर उसे गालियाँ दिया करती !

'पिटर्सबर्ग' के समान महानगर में रहने के कारण डोस्टावेस्की के साहित्यिक जीवन में स्फूर्ति आ गई थी । वह रूस का एक लब्धप्रतिष्ठ लेखक माना जाने लगा था । उसकी रचनाएँ आदर की दृष्टि से देखी जाने लगी थीं । इन्हीं दिनों 'पोलिन' नाम की एक नवयुवती उसकी ओर आकृष्ट हुई । वह विश्व-विद्यालय की एक छात्री थी । लेकिन उसकी पढ़ाई

भी केवल मनोविनोद मात्र थी। युवक विद्यार्थियों के साथ स्वतंत्रता के वायुमंडल में विचरण करना ही उसकी एकमात्र दिनचर्या थी! डोस्टावेस्की उसके चरित्र को न समझ सका। किन्तु अपनी पत्नी के दुर्व्यवहारों के कारण एक प्रेमवती सुन्दरी युवती की ओर आकृष्ट हो जाना उसके लिये स्वाभाविक था; क्योंकि पोलिन भी उसके प्रति प्रेम-भाव दरसाने में व्यस्त रहती थी। दोनों में क्रमशः घनिष्टता बढ़ने लगी।

बरसों से डोस्टावेस्की की यह हार्दिक अभिलाषा थी कि वह समस्त योरप में भ्रमण करे। 'पोलिन' से मिलन होने के पश्चात् ऐसा निश्चित हुआ कि वह उसको लेकर 'पेरिस' जायगा। दोनों समझते थे कि हमलोग वहाँ एक साथ रह कर अपने मन को प्रफुल्लित कर सकेंगे। किन्तु कई कारणों से डोस्टावेस्की वहाँ न जा सका। 'पोलिन' चली गई। जाते समय कह गई—वहाँ मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी।

दुर्भाग्य से, दो सप्ताह के बाद, पोलिन का एक पत्र डोस्टावेस्की को मिला। उसमें लिखा था—मैं

अपने एक नये प्रेमी को प्यार करने लग गई हूँ; इस लिये मेरे साथ तुम्हारा सम्बन्ध अब समाप्त हो गया!

यह समाचार पाकर डोस्टावेस्की पागल हो उठा! वह पोलिन के पास पेरिस पहुँचा। पोलिन भयभीत होकर उससे मिली। उसने खुले शब्दों में कहा—मैं अपने आदर्श प्रेमी के साथ अत्यन्त सुखी हूँ। अब लौटकर मैं स्वदेश (रूस) न जाऊँगी।

उसके अन्तिम निर्णय को सुन कर डोस्टावेस्की ने निश्चय कर लिया कि वह फिर कभी उससे न मिलेगा। वह स्वतंत्रता का पक्षपाती था। अतएव स्त्री-पुरुष के इस स्वच्छन्द सम्बन्ध में हस्तक्षेप करना उसके स्वभाव के विरुद्ध था। वहाँ से वह लन्दन चला गया।

कुछ दिनों के बाद, पोलिन का एक पत्र डोस्टा-वेस्की को फिर मिला। उसमें लिखा था—मैं तुमसे क्षमा-प्रार्थना करती हूँ। मेरा प्रेमी अविश्वासी और निर्दय है। फिर भी उसे छोड़ने का साहस मुझमें

नहीं है। तुम शीघ्र यहाँ चले आओ। नहीं तो मैं आत्महत्या कर लूँगी।

डोस्टावेस्की ने पोलिन के इस पत्र पर ध्यान न दिया। अन्त में 'पोलिन' ही डोस्टावेस्की के पास आ पहुँची। उसके पास एक चमकता हुआ छुरा था! उसने डोस्टावेस्की से कहा—मेरा प्रेमी बहुत बड़ा बदमाश है। मैं उसकी हत्या करूँगी। तुम्हें इस भयानक कार्य की पूर्व-सूचना दे देना उचित समझती हूँ। इसी लिये यहाँ आई हूँ।

न जाने डोस्टावेस्की के मन में क्या आ गया कि उसने पोलिन को शान्त करते हुए कहा—यह सब व्यर्थ है। इन सब बातों को भुला दो। मेरे साथ जर्मनी चलो।

पोलिन ने डोस्टावेस्की का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसकी मन्शा भी यही थी। पोलिन के साथ वहाँ जाकर जुआ खेलना ही डोस्टावेस्की की दिनचर्या थी। वह इस नवीन प्रेम-सम्बन्ध का समाचार अपनी पत्नी 'मेरिया' से गुप्त ही रखना चाहता था; क्योंकि

सदैव रोगिणी रहने के कारण 'मेरिया' के ऊपर इस घटना का गहरा आघात पहुँचता।

जब डोस्टावेस्की पिटर्सबर्ग लौट आया, तब 'मेरिया' की बीमारी अन्तिम अवस्था पर आ गई थी। यह सुनकर डोस्टावेस्की उसे डाक्टरों को दिखलाने के लिये 'मास्को' ले आया। किन्तु वह बच न सकी, वहीं उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् डोस्टावेस्की ने अपनी दुःखमयी कहानी का यथार्थ रूप प्रकट नहीं किया।

'मेरिया' की मृत्यु के बाद डोस्टावेस्की ने 'पोलिन' से विवाह करने का निश्चय कर लिया था। लेकिन 'पोलिन' विवाह के बन्धन में न बँधकर स्वतन्त्र रहना ही अच्छा समझती थी। अतएव उससे भी सम्बन्ध-विच्छेद हो गया!

❀ ❀ ❀

पोलिन और मेरिया ने डोस्टावेस्की के हृदय को दुःखमयी स्मृतियों का घर बना दिया था। अब उसे एक ऐसी स्त्री की आवश्यकता थी, जो उसके जीवन

को सुखी बना सके। इन्हीं दिनों 'एना क्रोनकोवेस्की' नाम की एक शिक्षिता महिला से डोस्टावेस्की का पत्र-व्यवहार आरम्भ हुआ। वह डोस्टावेस्की के उपन्यासों को पढ़कर मुग्ध हो गई थी। अन्त में केवल डोस्टावेस्की से मिलने के उद्देश से ही वह अपने पिता के साथ पिटर्सबर्ग आई। वहीं पर वह रहने भी लगी। दोनों का विवाह-सम्बन्ध भी निश्चित-सा हो गया था, किन्तु दोनों के राजनीतिक विचारों में मतभेद था। कभी-कभी विवाद इतना कटु हो जाता कि दोनों में लड़ाई हो जाती। इसी कारण से अन्त में विवाह नहीं हुआ! वह अनार्किस्ट (क्रान्तिकारिणी) थी। कुछ दिनों बाद उसने एक फ्रेंच अनार्किस्ट (विप्लववादी) से विवाह किया। ये दोनों ही समस्त संसार को नष्ट करके फिर से उसका नये रूप में निर्माण करने की कल्पना में लीन रहा करते थे।

❀ ❀ ❀

दिन-पर-दिन आर्थिक कठिनाइयाँ भीषण रूप में

डोस्टावेस्की के सम्मुख उपस्थित होती गई। यही कारण था कि एक प्रकाशक को उसने यह बौंड तक लिख दिया कि वह एक मास में एक उपन्यास लिख-कर देगा और न पूरा करने पर वह क्षतिपूर्ति करने के लिये वाध्य होगा। किन्तु एक महीने के भीतर एक बड़ा उपन्यास लिखकर देना कठिन था। अत-एव डोस्टावेस्की के मित्रों ने यह सलाह दी कि एक 'शार्टहैंड-टाइपिस्ट' नियुक्त कर लो, तो बड़ी सुविधा के साथ एक मास में एक बड़ा उपन्यास समाप्त हो जायगा। फलतः डोस्टावेस्की ने एक 'शार्टहैंड स्कूल' के प्रधान अध्यापक के पास पत्र भेजकर एक उपयुक्त व्यक्ति माँगा। अध्यापक ने अपने स्कूल की छात्री 'एना ओवेना' को भेज दिया। वह प्रतिदिन डोस्टावेस्की के यहाँ नियमित रूप से आती और उपन्यास लिखती रही। डोस्टावेस्की उससे सन्तुष्ट था। उसके कठिन परिश्रम के कारण ही डोस्टा-वेस्की का उपन्यास 'जुआड़ी' (The Gambler) केवल २६ दिनों में ही समाप्त हो गया।

इतने दिन एक साथ समय बिताने के कारण दोनों के हृदय में पारस्परिक सहानुभूति के भाव भर गये थे। उपन्यास समाप्त होने पर डोस्टावेस्की ने, अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए, कभी-कभी मिलते रहने का बचन उससे ले लिया था। उसने अपनी 'डायरी' में बड़े ही मनोरंजक ढंग से लिखा है कि डोस्टावेस्की ने किस तरह उसके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा था। ८ नवम्बर (१८६६ ई०) को डोस्टावेस्की के साथ जो बातें हुई थीं, उनका वर्णन अपनी डायरी में उसने इस तरह किया है—

मुझे भय था कि कहीं तुम अपनी प्रतिज्ञा को भूल न जाओ, किन्तु मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि तुम आ गई!—डोस्टावेस्की ने कहा।

लेकिन आपने ऐसा सोचा ही क्यों? क्या कभी मैंने अपनी प्रतिज्ञा भंग की है?—ऐना ने उत्तर दिया।

मुझे क्षमा करो। मैं जानता हूँ कि तुम सदैव सच्ची रही हो। इस समय तुम्हें देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।

और आपको इस तरह प्रसन्न देखकर मुझे भी बड़ी खुशी हुई है। क्या कोई ऐसी घटना हुई है, जिससे आप इतने प्रसन्न दिखाई पड़ते हैं ?

हाँ, मैंने कल रातको बड़ा आश्चर्यमय स्वप्न देखा है।

केवल इतना ही ?—पूछते हुए ग्रोवेना हँसने लगी।

कृपा कर हँसो न। तुम्हें यह नहीं मालूम है कि मैं स्वप्नों को बड़ा महत्व देता हूँ।

हाँ, तो आपने स्वप्न में क्या देखा ?

सामने पड़ा हुआ एक बक्स तुम देख रही हो। इसे मेरे एक मित्र ने साइबेरिया के कारावास के समय उपहार में दिया था। इस बक्स में मैं अपनी पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियाँ और अपनी प्रिय-से-प्रिय वस्तुओं को ही रखता हूँ। मैंने स्वप्न में देखा है कि मैं इस बक्स के कुछ कागजों को उलट-पलट रहा हूँ—मुझे एक चमकता हुआ सितारा दिखाई पड़ा, जो कभी प्रकट होता और कभी छिप जाता। मैं खोजने लगा और अन्त में मुझे छोटा-सा हीरा मिला !

फिर उसे क्या किया ?

दूसरे स्वप्नों ने आकर उसे अलग कर दिया! पता नहीं, उस हीरे का क्या हुआ।

इस प्रसंग को बदलने के विचार से एना-ग्रोवेना ने पूछा—कल दिन-भर आप क्या करते थे?

मैं एक नवीन प्रेम की रचना की कल्पना में लीन था।

सचमुच? क्या वह आकर्षक है?

मुझे तो वह बड़ी प्रिय है। यदि किसी भाँति मैं उसका अंतिम अंश लिख डालूं, तो बड़ा अच्छा हो; क्योंकि वह एक युवती की मनोवृत्तियों का वर्णन है, जो मेरे लिये बहुत कठिन है। यदि मैं 'मास्को' में होता, तो अपनी भतीजी से इसमें सहायता लेता; किन्तु यहाँ पर मुझे तुम्हारी ही सहायता लेनी पड़ेगी।

एना-ग्रोवेना बड़ी प्रसन्नता से उस कार्य में सहयोग देने के लिये प्रस्तुत हो गई। बोली—आपके इस उपन्यास का नायक कैसा है?

संक्षेप में वह मेरी ही अवस्था का एक भावुक है!

इसी तरह 'एना-ग्रोवेना' उपन्यास के नायक के सम्बन्ध में पूछती गई, और डोस्टावेस्की उसके प्रश्नों

का उत्तर देता गया। अन्त में ओवेना को विश्वास हो गया कि डोस्टावेस्की अपनी ही बातें नायक के आवरण में प्रकट कर रहा है।

डोस्टावेस्की ने अपने बचपन, कारावास, बीमारी, आरम्भिक प्रेम, पत्नी की मृत्यु, दरिद्रता, ऋण आदि का विस्तृत वर्णन किया।

एना-ओवेना ने गम्भीर होकर पूछा—लेकिन आपने उस नायक का अनुपयुक्त चित्रण क्यों किया है?

क्या तुम उसके प्रति सहानुभूति नहीं रखती हो?—डोस्टावेस्की ने उत्सुक होकर पूछा।

हाँ, उसके प्रति मेरी हार्दिक सहानुभूति है। आपका नायक सहृदय है। तनिक विचार तो कीजिये, वह कितनी कठिनाइयों का सामना करते हुए भी अपने को साहसी बनाये रखता है। इतने पर भी वह मनुष्यों को प्यार करता और उनकी सहायता करने को उद्यत रहता है। सचमुच आप उसके चित्रण में अन्याय करते हैं।—एना-ओवेना ने बड़े कोमल स्वर में कहा।

मैं तुमसे सहमत हूँ। वास्तव में वह सहृदय है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि तुमने उसे समझ लिया।

मुस्कुराते हुए डोस्टावेस्की ने उसकी ओर देखा। फिर कहना आरम्भ किया—इतनी अवस्था तक पहुँच कर भी मेरा नायक तुम्हारी अवस्था की एक नव-युवती से मिलता है। सम्भवतः वह नवयुवती तुमसे एक-दो वर्ष बड़ी हो। क्यों न हम उसे 'एना' के नाम से पुकारें, ताकि मुझे उसे नायिका न कहना पड़े।

एना-ग्रोवेना को सन्देह हुआ कि कहीं 'एना' का तात्पर्य सम्भवतः उस स्त्री से तो नहीं है, जिसके सम्बंध की अपनी प्रेम-कहानी स्वयं डोस्टावेस्की ने एक दिन उससे पहले कही थी। वह अपने हृदय में एक प्रकार की पीड़ा अनुभव करने लगी। वह स्वयं भूल गई थी कि उसका अपना नाम 'एना' है!

जिस 'एना' का चरित्र चित्रण एना-ग्रोवेना के सम्मुख किया गया था, वह नम्र, चंचल, दयालु, सजीव और व्यवहार-कुशल थी। यही कारण था कि

डोस्टावेस्की का आशय वह नहीं समझ सकी। उसने बड़ी उत्सुकता से पूछा—क्या वह देखने में भी सुन्दर है ?

वास्तव में वह बहुत सुन्दर नहीं है; किन्तु मैं उसे कुरूप भी नहीं कह सकता। मैं उसकी मुखाकृति को प्यार करता हूँ।

फिर भी 'एना ग्रोवेना' को विश्वास न हो सका कि डोस्टावेस्की उसी के लिये ये बातें कह रहा है।

मैं समझती हूँ कि आपने अपनी 'एना' को बहुत ही आदर्श-पूर्ण चित्रित किया है। क्या वास्तव में वह ऐसी ही है ?

ठीक ऐसी ही। मैंने उसका खूब अध्ययन किया है। और, जितना ही उसे देखता हूँ, उतना ही अधिक मेरा यह विश्वास जमता जान पड़ता है कि मेरा नायक उसके साथ में रहकर अपने जीवन को अधिक सुखी बना सकता है।

डोस्टावेस्की को ऐसा खयाल हुआ कि ऐसे विचारों का सफल होना असम्भव है। वास्तव में एक

बड़ी अवस्था का रुग्ण एवं ऋणग्रस्त मनुष्य उस स्वस्थ और प्रसन्नचित्त युवती लड़की को क्या दे सकता है ? क्या उस कलाकार नायक को अपनाना उस युवती का अपूर्व और भयानक त्याग नहीं हो सकता ? क्या अपने भाग्य को ऐसे मनुष्य के साथ जोड़ने पर उसे अन्त में भयानक पश्चात्ताप न करना पड़ेगा ? क्या यह सम्भव है कि एक लड़की, जो चरित्र और अवस्था में इतनी भिन्न हो, मेरे नायक को प्यार करे ? क्या यह मनुष्य की मनोवृत्तियों के लिहाज़ से मिथ्या नहीं है ?—डोस्टावेस्की ने इन प्रश्नों को पूछते हुए कहा—एना ! इसी विषय में मैं तुम्हारी राय जानना चाहता हूँ ।

यह सम्भव क्यों नहीं है ? वास्तव में यदि आपकी 'एना' एक क्षुद्र स्त्री नहीं है, बल्कि एक नम्र और कर्त्तव्यशील हृदय रखनेवाली है, तो क्यों न वह आपके कलाकार को प्यार करेगी ? वह दरिद्र और बीमार है, तो इससे क्या ? क्या कोई किसी-की सम्पत्ति को प्यार करता है, या आकृति और चरित्र को ? यदि वह उसे प्यार करती है, तो वह

स्वयं प्रसन्न रहेगी और पश्चात्ताप करने का उसे कभी अवसर न मिलेगा।—बड़े साहस से एना-ग्रोवेना ने कहा।

डोस्टावेस्की ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा—तो क्या तुम्हें इसका विश्वास है कि वह उसे जीवन-भर प्यार करेगी?

डोस्टावेस्की बड़ी गंभीरता से एक-टक एना-ग्रोवेना की ओर देखता ही रहा। उसने फिर कहा—एक क्षण के लिये उस नायिका के स्थान पर तुम अपने-आपको ही समझ लो और मुझे वह कलाकार समझो—ठीक वही नायक, जो तुमसे प्रेम करता है और कहता है कि तुम मेरी पत्नी बन जाओ। अब बतलाओ, ऐसी स्थिति में तुम्हारा क्या उत्तर होगा?

डोस्टावेस्की घबराया हुआ था। एना-ग्रोवेना का एक ही शब्द उसके भाग्य का निर्णय करनेवाला था।

एना-ग्रोवेना ने अपने मन में यह भी सोचा कि यह केवल एक साहित्यिक वर्णन ही नहीं, बल्कि वास्तविक चर्चा हो रही थी। उसने कहा—मैं तो यही

कहूँगी कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ और जीवन-पर्यन्त अपनी इस आन पर अटल रहूँगी।

दोनों कुछ देर के लिये शान्त और प्रसन्न रहे।

डोस्टावेस्की ने यह वादा किया कि वह शाम को उसके घर जायगा और बड़ी उत्सुकता से सदैव उसके मिलन की प्रतीक्षा में रहेगा।

अन्त में उसने कहा—एना-ओवेना ! अब मैं जानता हूँ कि उस हीरे का क्या हुआ।

क्या 'तुम्हें' वह स्वप्न याद है ?—एना ने पूछा।

नहीं, मुझे स्वप्न याद नहीं है, लेकिन मुझे हीरा मिल गया और उसे मैं जीवन-भर अपने पास रखूँगा !—डोस्टावेस्की ने कहा !

यह तुम्हारी भूल है। वह हीरा नहीं, केवल काँच का टुकड़ा है।—ओवेना ने हँसते हुए कहा।

इस बार मैंने भूल नहीं की है, ऐसा मुझे विश्वास है, एना !—डोस्टावेस्की ने दृढ़ होकर उत्तर दिया।

\+ \+ \+

सन् १८६७ ई० की १५वीं फरवरी को डोस्टा-

वेस्की ने एना-ग्रोवेना से विवाह किया। उस समय एना की अवस्था २१ वर्ष की थी। १४ वर्ष तक दोनों का साथ रहा। एना-ग्रोवेना अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रही। उसने जीवन-पर्यन्त डॉस्टावेस्की को हृदय से प्यार किया।

एना-ग्रोवेना के साथ रहकर चौदह वर्ष में डोस्टा-वेस्की ने एक दर्जन उच्च कोटि के उपन्यास लिखे थे, जो आज संसार की अनेक भाषाओं में अनुवादित होकर अपने लेखक की कीर्ति को अमर कर रहे हैं।

१८८१ ई० में डोस्टावेस्की का देहांत हुआ। उसके बाद एना-ग्रोवेना जीवन-भर डोस्टावेस्की के कार्य में ही व्यस्त रही। उसने अपना संस्मरण लिखा था, जो उसकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।

एना-ग्रोवेना के कठिन परिश्रम के कारण ही 'मास्को' के ऐतिहासिक म्यूजियम में डोस्टावेस्की का एक अलग विभाग बनाया गया है, जिसमें अब भी लोग डोस्टावेस्की की सब रचनाओं की पांडुलिपियाँ देखने जाते हैं। लेखक के चित्र, नोटबुक, पत्र, डायरी

और उसके जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली अमूल्य वस्तुएँ वहाँ पर रखी हुई हैं ।

यह कहना पड़ेगा कि संसार में बहुत कम लेखकों को अपने साहित्य-कार्य में अपनी पत्नी का इतना बड़ा सहयोग प्राप्त हुआ होगा, जितना एना-ग्रोवेना से डोस्टावेस्की को प्राप्त हुआ था ।

डोस्टावेस्की की मृत्यु के ३७ वर्ष बाद, एना-ग्रोवेना का देहान्त १९१८ ई० में हुआ । उस समय उसकी अवस्था ७२ वर्ष की थी ।

+ + +

एक बार 'लीओ टाल्स्टाय' ने डोस्टावेस्की की पत्नी 'एना-ग्रोवेना' से पूछा—डोस्टावेस्की किस तरह का पुरुष था ?

उत्तर में एना ने कहा—मैंने अपने जीवन में जितने पुरुष देखे, उनमें सबसे अधिक दयालु, सहृदय, समझदार और उदार डोस्टावेस्की को ही पाया ।